गसमाप्तः ॥ १५ ॥ इतिश्री...तादितनरवुदचंतामणीग्रंथसंपुर्णः ॥ छ ॥
संवत् १९२८ नाआसोसुदी १० नेवारशनीवारेसंपुर्णः ॥ समाप्तः ॥ ॥ छ ॥

अथश्रीआरतीप्रारंभः ॥ पेहेलीआरती प्रेमहुलासा ॥ अनंतकोटजोहाकरत
विलासा ॥ १ ॥ दुसरीआरतीदीरघमुरतकी ॥ देवसकल दिव्यमंगळमुरतकी ॥ २
तीसरीआरतीसकलसुमतकी ॥ ब्रह्माविष्णुमाहेसरपतकी ॥ ३ ॥ चोथीआरती
सकलचराचर ॥ प्रणवपेचजेहीरहीभराभर ॥ ४ ॥ पंचमीआरतीपरमपुरसके ॥
सकलसाजकळ्यकरनदुरसके ॥ ५ ॥ षष्टमीआरतीसगुनमुरतकी ॥ मछकछव्या
घ्रवेराहसमतकी ॥ ६ ॥ सप्तमीआरतीसरलसत्तकी ॥ व्यापकवीतचरअचरग
तकी ॥ ७ ॥ अष्टमीआरतीअजनआरसकी ॥ परमपुरसअवीकासकरसकी ॥ ८
नवमीआरतीनवेनीधसिधकी ॥ सकलसरधपुरीतसनीधकी ॥ ९ ॥ दसमीआ
रतीआद्यपुरसकी ॥ छेकछवटपतीपरमउरसकी ॥ १० ॥ जाहीपरंतअंतुनहीको
उकीत ॥ नीजकैवलकारनवीनुउतईत ॥ ११ ॥ जीनकेसुधसंकल्पेसलपमे ॥ अ

षीवलोक उपजाय पलपमे ॥२२॥ केहैं कुवेर अनेर आरतकी ॥ भवउतपनअबद
गन सारतकी ॥२३॥ आरती करत नीगम हरीदासा ॥ हरी हरी अगम अगोचर अ
वीगतवासा ॥४॥ ईती आरती संपूर्णः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ